ISSN 2349 638x
Impact Factor 6.293

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 64

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Head, Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Scanned with CamScanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Impact Factor – 6.293

Special Issue 64 Editorial Board

Advisory Board

Prin. Dr. Milind Hujare, Vasantrao Dada Patil Mahavidyalaya, Tasgon

Prin. Dr. Anil Patil, A. K. M. M. Ichalkaranji

Prin. Dr. Babasaheb Dudhale, Dr. Patangrao Kadam Mahavidyalaya, Pen

Prin. Dr. Samad Shaikh, Ex Principal, Vasantrao Naik College, Aurangabad

Prin. Dr. S. Y. Hongekar, Vivekanand College, Kolhapur

Prin. Dr. R. R. Kumbhar, Dattajrao Kadam Mahavidyalaya, Ichalkaranji

Prin. Dr. S. B. Kurane, Samajbhushan Ganpatrao Kalbhore Mahavidyalaya, Lonikalbhore

Review Committee

Dept. of Hindi

Dr. Arjun Chavan, Kolhapur

Dr. D. Y. Ingale, Osmanabad

Dr. Ashok Marde, Tuljapur

Dr. M. R. Ade, Tuljapur

Dept. of Marathi

Prin. Dr. Haridas Phere, Dhoki

Dr. Shirish Landage Patil,Newasa

Dr. D. R. Gaikwad, Solapur

Dr.Nanasaheb Suryawanshi, Loha

Dept. of English

Ex Prin. Dr. F. A. Siddikui, Bidkin

Dr. S. S. Kanade, Murum

Dr. C. R. Dapke, Tuljapur

Dr. Farjana M. Tamboli, Tuljapur

Scanned with CamScanner

Sr No	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
87.	डॉ. विजय कुमार	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	239
88.	प्रा.डॉ.एस.एस. कदम	हिंदी वर्तनी का मानक रूप	243
89.	श्री जगन्नाथ आबासो पाटील	वेब साहित्य का हिंदी भाषा के विकास में योगदान	245
90.	प्रा. निर्मला लक्ष्मण जाधव	मिडिया में फिचर लेखन की कला	247
91.	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	हिंदी भाषा अध्ययन के रोजगाराभिमुख आयाम (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विशेष संदर्भ में)	251
92.	संतोष तुकाराम बंडगर	इक्कीसवीं सदी का दौर और अनुवाद का महत्व	253
93.	सागर गणपत यादव	अनुवाद : अवधारणा एवं क्षेत्र	255
94.	सतीश कृष्णात पाटील-कोले	इलेक्ट्रोनिक मीडिया में रोजगार के अवसर	257
95.	डॉ. आरिफ महात	भाषा अध्ययन में रोजगार की स्थिति एवं गति	259
96.	प्रा.डॉ. विनय एस. चौधरी	हिंदी भाषा अनुवाद और रोजगार के अवसर	261
97.	सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	रोजगारोन्मुख हिंदी का वर्तमान परिदृश्य	263
98.	डॉ. रमेश विठोबा कांबळे	मीडिया महिलाओं के लिए एक रोजगार	265
99.	डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील	अनुवाद तथा भाषा विज्ञान अंतरसंबंध	268

Scanned with CamScanner

भाषा अध्ययन में रोजगार की स्थिति एवं गति

डॉ. आरिफ महात
हिंदी विभागाध्यक्ष,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

भाषा हमेशा से अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। इधर वैश्विकरण के दौर में इसकी अहमियत में बढोत्तरी हुई है। विश्व ग्राम की संकल्पना ने विश्व के सारे दायरों को तोड दिया है या कह सकते हैं कि अपने दायरों को बढाया है। साथ ही दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है और इस बदलती दुनिया के बदलते रीति रिवाजो की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा ही रही है। नई शिक्षा नीति ने हर शिक्षा को रोजगार से जोड़कर देखने की शुरूआत की है और यह जरूरी भी बन गया है। वास्तव में आज ये जरूरी बन चुका है कि हम जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उसकी उपयोगिता क्या है? भाषा का अध्ययन भी इससे अधूता नहीं है।

प्रिंट मीडिया में रोजगार –

मुद्रित माध्यमों का इतिहास बड़ा पुराना है। पत्रकारिता में मुद्रित माध्यम का अपना अलग स्थान है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के इस दौर में भी प्रिंट मीडिया अपना स्थान बनाए हुए है। वास्तव में आज पत्रकारिता का क्षेत्र बड़ा व्यापक हो गया है। पत्रकारिता ने अपने अंदर मनुष्य जीवप से जुड़ी हुई सारी घटनाओं को एवं स्थितियों को समेट लिया है। इसने पुरी तरह से मनुष्य जीवन को प्रभावित किया है। इसके फैलते विस्तार के कारण ही इसमें रोजगार के असीम अवसर प्राप्त हो रहे हैं। आज प्रिंट मीडिया में निम्न रूप में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है–

1. संपादक
2. संयुक्त संपादक
3. सहायक संपादक
4. समाचार संपादक
5. सहायक समाचार संपादक
6. मुख्य उप संपादक
7. उप संपादक
8. साहित्य संपादक
9. खेल संपादक
10. फिल्म संपादक
11. व्यापार संपादक
12. प्रति संशोधक (प्रूफ रीडर)
13. संवाददाता
14. विशेष संवाददाता
15. मुख्य कार्यालय संवाददाता
16. उप मुख्य कार्यालय संवाददाता
17. कार्यालय संवाददाता
18. व्यवस्थापक आदि

कहने का तात्पर्य यही है कि भाषा का अध्ययन करनेवाला इन क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकता है।

इलेक्ट्रनिक मीडिया में रोजगार – वर्तमान समय इलेक्ट्रनिक मीडिया का है। दृक–श्रव्य माध्यमों ने हमारे जीवन को पूरी तरह से व्याप्त लिया है। इलेक्ट्रनिक मीडिया में तीव्रता से सूचनाओं का आदान–प्रदान करने की शक्ति है। इलेक्ट्रनिक मीडिया में निम्न रूप में रोजगार को प्राप्त किया जा सकता है–

1. **रेडियो में रोजगार**– इलेक्ट्रनिक मीडिया में रेडियो का अपना अलग स्थान है। रेडियो गाँव या शहर, साक्षर या निरक्षर हर एक तक पहुंचने का प्रभावी माध्यम है। रेडियो श्रव्य माध्यम होने के कारण यहाँ सिर्फ बोलनेवालों के लिए ही अवसर है, ऐसी धारणा बनी हुई है जबकि रेडियो में लिखनेवालों के लिए भी रोजगार के असीम अवसर प्राप्त होते हैं। रेडियो में समाचारों से लेकर नाटक, कविता, कहानी, रूपक, जिंगल (विज्ञापन), वार्ता, प्रोमों, भेटवार्ताएँ, चर्चा–परिचर्चायें आदि के लेखक की आवश्यक्ता रहती है।
2. **टेलीविजन में रोजगार**– टेलीविजन आज हमारे नित्य जीवन का अहम हिस्सा बना हुआ है। टेलीविजन के आगमन से दृक–श्रव्य माध्यम में रोजगार के सुनहरे अवसर प्राप्त हो चुके हैं। आज सारे देश में हिंदी तथा प्रादेशिक भाषा के चैनलों को बड़े चाव से देखा जाता है। टेलीविजन के इस युग ने भाषा के अच्छे जानकार और लेखकों के लिए रोजगार के अनेक रास्ते खोल दिए हैं। आजकल टेलीविजन पर कड़ीबद्ध धारावाहिक (सीरियल), पीरियड धारावाहिक, सोप ऑपेरा, जासूसी कथाएँ, थ्रिलर स्टोरी, कॉमेडी सीरियल, मिथकिय–पौराणिक धारावाहिक आदि अनेक कार्यक्रमों की रेलचेल है। आज हर चैनल स्पर्धा के चलते अपने चैनल पर कुछ नया दिखाने की जद्दोजहद में नजर आता है। इसलिए यहाँ हमेशा नयी सोचवालों की जरूरत बनी रहती है। टेलीविजन लेखन में रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध लेखन के साथ नई सोच को प्रस्तुत करना भी जरूरी बन गया है। टेलीविजन पर सफल लेखक के गुणों के संदर्भ में कमलेश्वर कहते हैं," कोई भी व्यक्ति अभ्यास के द्वारा पटकथा लेखक बन सकता है। इसमें कोई ऐसी बड़ी चीज नहीं है। वह इसलिए की यह एक तरह का अर्द्धवैज्ञानिक, अर्द्धतकनीकी काम है और अर्द्धरचनात्मक भी है तो जहाँ अर्द्ध–अर्द्ध है वहाँ उसे कोई भी समझ सकता है।" आगे वे कहते हैं," टेलीविजन में सफल लेखक एवं पटकथाकार बनने के लिए जरूरी नहीं है साहित्यकार होना। लेकिन साहित्य का एक अच्छा पाठक होना एक क्वालिफिकेशन मानी जा सकती है एक अच्छे पटकथाकार होने के लिए। वैसे क्लासिक पढ़ने से ज्यादा मदद नहीं मिलती है। सबसे आवश्यक है आप कार्यक्रम देखें।" अतः स्पष्ट होता है कि टेलीविजन में लेखन के लिए आप साहित्यकार न हो तो भी चलेगा बस आपको अपनी बात कहने का सही ढंग आना चाहिए।
3. **फिल्म उद्योग में रोजगार**– फिल्म उद्योग में भाषा का अध्ययन करनेवालों के लिए रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं लेकिन ये याद रखने की जरूरत है कि यहाँ काम करने के लिए सिर्फ भाषा की समझ होना काफी नहीं है। बल्कि भाषा की समझ के साथ सिनेमा की समझ होनी चाहिए। साथ ही चित्रों एवं ध्वनियों का उचित उपयोग एवं

Scanned with CamScanner

उसकी समझ भी होनी चाहिए। इस क्षेत्र मे भाषा का अध्येता – पटकथाकार, संवाद लेखक, गीतकार, फिल्म समीक्षक, अभिनय आदि मे रोजगार प्राप्त कर सकता है।

4 **विज्ञापन लेखन में रोजगार**– बाजार के इस युग मे हर चीज बीक रही है। हर जगह बाजार लगा है। जानलेवा प्रतियोगिता के इस दौर मे हर एक अपनी चीज बेचने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। यही वजह है कि आज के इस उपभोक्ता जीवन मे विज्ञापन का महत्त्व बहुत ज्यादा बढा हुआ नजर आता है। विज्ञापन के अंतर्गत विज्ञापन प्रबंधक, सहायक प्रबंधक, विज्ञापन विशेषज्ञ आदि प्रमुख पद है। एक विज्ञापन एजेंसी मे 1. बांड सर्विसिंग 2. एकाउंट प्लानिंग 3. क्रिएटिव टीम/रचनात्मक विभाग 4. मीडिया प्लानिंग आदि विभाग होते है। ये सब एक टीम की तरह काम करते है। भाषा का जानकार अपने रुची के हिसाब से यहाँ रोजगार प्राप्त कर सकता है।

अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार– वैश्विकरण ने समूचे विश्व को एक गाम में बदल दिया है। विश्व में फैली विभिन्नता– धर्म, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, भाषा, खान–पान आदि से संबंधित ज्ञान को जानने, समझने के लिए अनुवाद कारागर साधन साबीत हो चुका है। अनुवाद ज्ञान प्राप्ती का साधन बन चुका है। आज के वैज्ञानिक युग मे विज्ञान एवं तकनीकी ने इंसानी जीवन के हर क्षेत्र को व्याप्त रखा है। विश्व में व्याप्त विज्ञान एवं तकनीकी से संबंधित ज्ञान का सामग्री अनुवाद के कारण ही हम तक आसानी से पहुँचती है। इसी प्रकार सभी धर्मो में व्याप्त मानवतावादी दृष्टिकोण को हम अनुवाद के कारण ही समझ सके हैं। अतः अनुवाद का क्षेत्र व्यापक है जिस में निम्न रूप मे रोजगार प्राप्त किया जा सकता है–

1. शिक्षा के क्षेत्र मे
2. पर्यटन के क्षेत्र मे
3. प्रशिक्षक के क्षेत्र मे
4. साहित्यिक के क्षेत्र मे
5. प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में
6. इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में
7. फिल्म के क्षेत्र में
8. विज्ञापन के क्षेत्र में
9. कृषी के क्षेत्र मे
10. सामाजिक क्षेत्र में
11. राजनीतिक क्षेत्र मे
12. सांस्कृतिक क्षेत्र मे
13. धार्मिक क्षेत्र में
14. क्रीडा क्षेत्र में
15. सरकारी कार्यालयों में
16. तकनीकी क्षेत्र में

आदि असीम क्षेत्र हैं जहाँ भाषा का अध्ययनकर्ता रोजगार प्राप्त कर सकता है।

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में भाषा का अध्ययन करनेवाला रोजगार प्राप्त कर सकता है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में इनकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है। वर्तमान में भाषा अध्येता के लिए रोजगार प्राप्त करना आसान बन चुका है।

भाषा अध्ययन के रोजगारोन्मुख के विविध आयाम होने के बावजूद यह खेद के साथ कहना पड़ता है कि वास्तविकता इससे परे है। आज भाषा अध्ययन के क्षेत्र में बेरोजगारी का प्रमाण ज्यादा है। इस स्थिति के अध्ययन के उपरांत कुछ तथ्य सामने आते हैं जिसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता–

1. आज भाषा का छात्र सिर्फ संबंधित भाषा के साहित्य को पढ़ता है भाषा को नहीं।
2. ज्यादातर भाषा के अध्ययनकर्ता को भाषा की समझ ना के बराबर है।
3. आज भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को जरूरी नहीं समझा जाता।
4. भाषा अध्ययनकर्ता के भाषा के व्याकरण का ज्ञान सिर्फ परिक्षाओं तक सीमित है।
5. भाषा की उत्पत्ती, उसका विकास, भाषा का बदलता स्वरूप, उसकी मिमांसा आदि से भाषा का अध्ययनकर्ता अनजान है।
6. भाषा अध्ययन को लेकर महीविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम की भूमिका का संदिग्ध रहना आदि।

यही कारण है कि किसी भी भाषा का छात्र भाषा के रूप में सिर्फ साहित्य पढ़ता है। और उपर्युक्त जितने भी रोजगार हैं उसमें उस साहित्य के जानकार की नहीं बल्कि उस भाषा के जानकार की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है। इस भूमिका में कहीं–न–कहीं हमारे अध्ययनकर्ता अपाहिज पजर आते हैं। ऐसे अपाहिज जिसके पास पैर तो हैं लेकिन वो चलने और दौड़ने में असमर्थ है। फिर चाहे जितने भी क्षेत्र क्यों न हो योग्यता के अभाव में वह बेरोजगार ही रहते हैं।

समाधान– अगर इस स्थिति को बदलना है तो हमारे लिए भाषा के साहित्य के साथ भाषा की सही समझ को भी आत्मसात करना अनिवार्य बन जाता है। इसलिए भाषा के स्वरूप को समझाने के लिए हमें हमारे पाठ्यक्र में भाषा के प्रात्यक्षिक स्वरूप को ज्यादा तरजीह देनी होगी ताकि भाषा का अध्ययन करनेवाला उस भाषा का परिपूर्ण ज्ञाता बन जाए। प्रात्यक्षिक के माध्यम से कार्य करते समय आनेवाली समस्याओं को पढ़ाई के दौरान ही हल करनेवाला बने। इस प्रकार भाषा का अध्ययन करनेवाला उपर्युक्त अपनी मर्जी के क्षेत्र में आसानी से रोजगार प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण, मीडियाकालीन हिंदीः स्वरूप एवं संभावनाएँ।
2. डॉ. अर्जुन चव्हाण, अनुवाद चिंतन।
3. सं. डॉ. सुभाष तलेकर, रोजगारभिमुख हिंदीः दिशाएँ एवं संभावनाएँ।
4. सं. डॉ. आरिफ महात और रशीद तहसीलदार, मीडियाः हिंदी और पत्रकारिता।

Scanned with CamScanner